दवारा हमको वसी दे रहे है। दुनिया के मनुष्यतो कुछ भी नही जानते है। बिलकुल ही तुच्छ वुधी है। अभी तुम तुच्छ वुधी से स्वच्छ वुधी वन रहे हो। सवकुछ जान गये हो। और कुछ पढ़ने की दरकार ही नही है। इस पढ़ाई से तुमको विश्व की वादशाही मिलती है। इसलिये वाप को नालेज फुल कहते है। मनुष्य फिर सोचते है कि एक के दिल को जानते है। परन्तु वाप तो नालेज फुल है नालेज देते है। टीचर समझ सकते है फलाना कितना पढ़ता है। वाकी सारा दिन यह थोड़ेई वैठ देखेगा कि इसकी वुधी में क्या चलता है। यह तो कुछ काम का नही है। तो यह नालेज वड़ीमण्डर फुल है। वाप को भी ज्ञान का सागर सुख का सागर शान्ती का सागर कहा जाता है। तुम भी अभी ज्ञान का सागर... वनते हो। फिर यह टाईटिल उड़ जावेगा। फिर ईश्वरीय वंशावली 16 कला सम्पूर्ण, मर्यादा पुरुषोत्तम वनते है। वो है मनुष्य का ऊँच पतवा। इस समय यह है ईश्वरिय पतवा। कितनी समझने और समझाने की वात है। वच्चे का चित्र देख कर वहुत खुशी होनी चाहिये। हम अभी वो वन रहे है। हम विश्व के मालिक वनेंगे। नालेज से ही ऐट्रीव्यूस आते है। अपना ऐम आब्जेक्ट देखने से ही रिफ्रेशमेन्ट आ जाती है। इसलिये वावा कहते है कि यह लक्ष्मी नारायण का चित्र हरएक के पास होना चाहिये। 30×40 में छपालो। अभी रमेश जाकर छपावेगा। गवर्मेन्ट का आर्डर है ना। यह चित्र तो हर एक पास होना चाहिये। थोड़ा छोटा भी ट्रान्सलाईट में वनें तो वड़ा अच्छा है। हर सेन्टर पर ऐम आब्जेक्ट का चित्र रख दें। देखने से ही दिल खुश होती है। वावा स्वर्ग की महिमा वहुत करते है। यह चित्र दिल में प्यार वढ़ाता है। वावा तुरन्त देखते है दिल में आता है कि इस मृत्यु लोक में यह लास्ट जन्म है। फिर हम अमर लोक में जाकर पैदा वनेंगा। तत त्वम। ऐसे नही कि आत्मा सो परमात्मा कहे। यह ज्ञान सारा वुधी में वैठा हुआ है। यह तो छपवा लेना चाहिये। जव भी किसीको समझाते हो वोलो हम कव भी कोई से भीख नही मांगते है। प्रजापिता व्रह्मा के वच्चे तो वहुत है हम अपने तन मन धन से यह सेवा करते है। ब्राह्मण अपनी कमाई से ही यज्ञ को चला रहे है। वुद्धू के पैसे नही लगा सकते है। ढेर वच्चे है। वो जानते है जितना हम तन मन धन से सर्विस करेंगे सरेण्डर वनेंगे उतना पद पावेंगे। जानते हो वावा ने भी छोड़ा है। तो यह लक्ष्मी वनते है ना। पैसे तो काम में आते नही है। फिर क्यों नही इस काम में लगादें। फिर क्या सरेण्डर होने वाले झूठ मरते है? वहुत सम्भाल होती रहती है। वावा की कितनी सम्भाल होती है। यह तो शिव वावा का रथ है ना। सारी दुनिया को हसीन वनाने वाला है। यह हसीन मुसाफिर है। परमपिता परमात्मा हुसेन आकर सवको हसीन वनाते है। तुम सांवरे से गोरा हुसीन वनते हो ना। कितना सलोना सजन है। आकर सवको गोरा वना देते है। इन पर तो कुरवान जाना चाहिये। याद करते रहना चाहिये। जैसे आत्मा को देख नही सकते है जान सकते है। वैसे ही परमात्मा को भी जान सकते है। देखने में तो आत्मा और परमात्मा दोनों एक जैसी विन्दी, वाकी तो है सारी नालेज। यह वड़ी समझ की वातें है। वच्चों की वुधी में यह नोट रहनी चाहिये। वुधि में नम्वरवार पुरुषार्थ धारण होती है। डाक्टरस को भी सव दवाईया याद रहती है ना। ऐसे नही कि उस समय वैठ कर किताव देखेंगे। डाक्टरी की भी पुआइन्टस होती है तुम्हारे पास भी पुआइन्टस है। टापिक्स है। जिस पर समझाते हो। कोई पुआइन्ट किसके फायदा करती है। कोई को किस पुआइन्ट का तीर लग जाता है। पुआइन्टस तो वहुत ढेर की ढेर है। जो अच्छी रीत धारण करेंगे वो अच्छी रीत सर्विस कर सकेंगे। आधा कल्प के महारोगी पेशेन्टस है। पतित आत्मा वनी है। सवके लिये एक ही अविनाशी ज्ञान सजिन दवा देते है। वो सदा निरोगी रहते है। कभी विमार होते नही है। और तो सव विमार पड़ जाते है। अविनाशी सजन एक ही वार आकर मन्मनाभव का इन्जेक्शन लगाते है। कितना सहज है। चित्र तो पकिटस में रख दो सदैव। वावा आगे नारायण का पुजारी था तो लक्ष्मी का चित्र निकल कर अकेला नारायण का चित्र रख दिया। अभी पता पड़ता है जिसको हम पुजते थे वो अव वन रहे है। लक्ष्मी को विदाई देदी। तो यह भी पक्का होता है हम लक्ष्मी नही वनेंगे। लक्ष्मी वैठकर पाँव दववावे यह अच्छा नही लगता था। इनको देख कर पुरुष लोग स्त्री से पैर दववाते है। तो वावा ने पहले से ही फोटोसे मुक्त